■ विश्व इतिहास के अध्ययन का अर्थ है परिवर्तन के तत्वों को रेखांकित करना तथा इस क्रम में अतीत से वर्तमान तक के विकास को रेखांकित करना।

- परिवर्तन के प्रक्रम को समझने के लिए निम्नलिखित फार्मूला का उपयोग

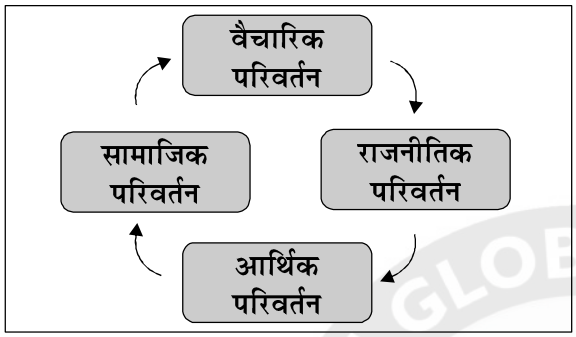

■ **महत्वपूर्ण टॉपिक:**

- राजतंत्र का उद्भव तथा राष्ट्रीय-राज्य की स्थापना (इस परिवर्तन को समझने के लिए 14वीं सदी से 18वीं सदी के बीच यूरोप में होने वाले परिवर्तनों को समझना आवश्यक है।)
- प्रबोधन तथा यूरोप का आधुनिकीकरण।
- अमेरिकी क्रांति तथा अमेरिकी संविधान।
- फ्रांस की क्रांति तथा इसका प्रभाव एवं नेपोलियन बोनापार्ट।
- यूरोप में उदारवाद तथा राष्ट्रवाद एवं यूरोप पर इसका प्रभाव - इटली एवं जर्मनी का एकीकरण, ऑटोमन साम्राज्य एवं बाल्कन प्रश्न।
- औद्योगिक क्रांति- ब्रिटेन, जर्मनी, रूस एवं जापान।
- एशिया में साम्राज्यवाद तथा अफ्रीका का विभाजन।
- समाजवाद एवं वामपंथ
- प्रथम विश्व युद्ध का उद्भव एवं प्रभाव, पेरिस शांति सम्मेलन एवं अरब राष्ट्रवाद।
- विश्व आर्थिक मंदी तथा इटली एवं जर्मनी में फासीवाद एवं नाजीवाद का उद्भव।
- मुसोलिनी एवं हिटलर की विदेश नीति तथा द्वितीय विश्व युद्ध - एशिया एवं अफ्रीका पर प्रभाव।
- शीतयुद्ध एवं गुटनिरपेक्ष आंदोलन, अंतर्राष्ट्रीय संकट; जैसे- स्वेज नहर संकट, क्यूबा प्रक्षेपास्त्र संकट, वियतनाम संकट।

■ **अध्ययन का विशिष्ट तरीका**

- **अध्ययन की लंबवत् पद्धति:** टॉपिक विशेष का गहराई से अध्ययन-

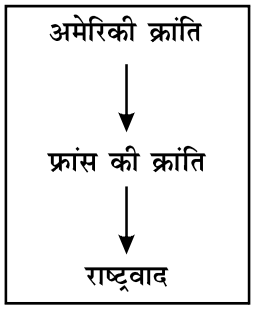

- **अध्ययन का क्षैतिज दृष्टिकोण:** एक टॉपिक को दूसरे टॉपिक से जोड़ते हुए परिवर्तन के तत्वों को रेखांकित करना-

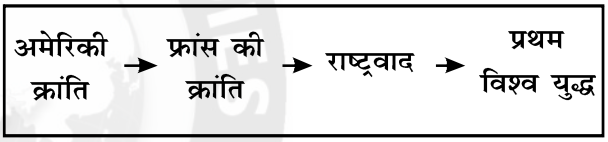

■ **अन्तर्अनुशासनात्मक दृष्टिकोण (Interdisciplinary approach)**- इतिहास विषय के माध्यम से अन्य विषयों की समझ विकसित करना।

- **विश्व इतिहास**- विश्व इतिहास का उपयोग हम अंतर्राष्ट्रीय संबंध, अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, राजव्यवस्था और संविधान की समझ को विकसित करने में भी कर सकते हैं।

■ **विश्व इतिहास के अध्ययन को यूरो-केंद्रित (Euro-centric) क्यों माना जाता है?**

- पश्चिमी विचारकों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि विश्व की महान भौतिक एवं वैचारिक उपलब्धियाँ पश्चिमी विश्व में ही प्रकट हुईं तथा पश्चिम से ही उनका प्रसार विश्व के अन्य क्षेत्रों में हुआ।

■ **यूरो-केंद्रित (Euro-centric) विचार से सहमत होना क्यों कठिन है?**

- विश्व की प्राचीनतम सभ्यताएँ एशिया एवं अफ्रीका में विकसित हुईं, यथा– पश्चिम एशिया में मेसोपोटामिया की सभ्यता, भारत में सिंधु घाटी की सभ्यता तथा उत्तर-पूर्वी अफ्रीका में मिस्र की सभ्यता। इसके थोड़े समय बाद की चीन की सभ्यता थी। जहाँ तक यूरोप का सवाल है तो यूरोप की प्राचीनतम सभ्यता, यूनान की सभ्यता (ग्रीक सभ्यता), ऊपर वर्णित सभ्यताओं से बहुत बाद की है।
- उसी प्रकार, प्रथम वैश्विक साम्राज्य की स्थापना यूरोप में नहीं, बल्कि पश्चिम एशिया में हुई तथा इसे अखमनी साम्राज्य (Achaemenid Empire) के नाम से जाना गया। इतना तक कि यूरोपीय पुनर्जागरण के उद्भव में भी पूर्वी सभ्यताओं का योगदान रहा है।

प्राचीन यूरोप

■ **प्राचीन यूरोप में राजनीतिक संरचना (Political structure during Ancient Europe):**

- विश्व के विभिन्न क्षेत्र एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप में तथा क्रमिक रूप में विकसित हुये। मानव पहले शिकारी एवं खाद्य संग्राहक था, नवपाषाण काल में पहली बार वह खाद्य उत्पादक की अवस्था में पहुँचा। फिर मानव ने पहले धातु के रूप में ताँबे का प्रयोग आरम्भ किया। अतः इस कालखण्ड को ताम्र-पाषाणकाल के नाम से जाना गया। फिर विश्व के कुछ समुदायों ने ताँबे से काँसे का विकास किया। यह ताँबे की तुलना में अधिक ठोस धातु थी तथा उत्पादन में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण थी, इसलिए यह समुदाय अधिक विकसित होकर सभ्यता की अवस्था में पहुँच गया, फिर यह नगरीकरण की अवस्था में पहुँच गया तथा लिपि का प्रचलन भी आरम्भ हो गया।
- विश्व की इन प्राचीनतम् सभ्यताओं में उत्तरी-पूर्वी अफ्रीका में मिस्र की सभ्यता, इराक में दजला-फुरात की घाटी में मेसोपोटामिया की सभ्यता तथा भारत में हड़प्पा सभ्यता अस्तित्व में आयीं। लगभग उसी काल में 1500 ई.पू. में अमेरिका में माया सभ्यता विकसित हुई। चीन की सभ्यता इसके बाद की है। यूरोप इनके बहुत बाद सभ्यता की अवस्था में पहुँचा। सबसे पहले दक्षिणी-पूर्वी यूरोप में यूनान की सभ्यता आयी। इसकी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण यह नगर, राज्य (800 ई.पू.) की अवस्था में पहुँच गया।
- ताँबे के पश्चात् मानव समुदाय लोहे की अवस्था में पहुँचा। लोहा एक मजबूत धातु था तथा इसकी प्रचुरता भी अधिक थी। अतः इससे उत्पादन को प्रोत्साहन मिला। इसके परिणामस्वरूप बड़े-बड़े साम्राज्यों की स्थापना सम्भव हुई। इस प्रकार साम्राज्यों का युग आरंभ हुआ। इसके तहत निम्नलिखित साम्राज्यों की व्याख्या की जा सकती है-
- **अखमिनी साम्राज्य** (Achaemenid Empire)- यह साम्राज्य पश्चिम एशिया के ईरान में डेरियस के अधीन विकसित हुआ। इसे पहला वैश्विक साम्राज्य माना जाता है जो दक्षिणी पश्चिमी यूरोप से लेकर मध्य एशिया और उत्तर-पश्चिम भारत तक फैला हुआ था। वही समय है जब भारत में मगध साम्राज्य का उद्भव और विस्तार आरम्भ हुआ।

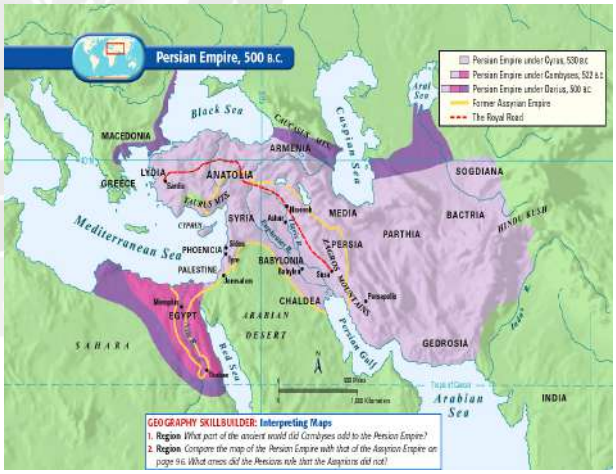

- **सिकन्दर का साम्राज्य (Alexander's Empire)**- आगे डेरियस के साम्राज्य के पतन के पश्चात् सिकन्दर के साम्राज्य का उद्भव एवं विस्तार हुआ। इसका आधार यूनान में मकदूनिया था। सिकन्दर के पिता फिलिप ने दक्षिणी-पूर्वी यूरोप में यूनान के नगर राज्यों को जीत लिया था। उसके द्वारा ही एक साम्राज्य का निर्माण किया गया। आगे उसके पुत्र सिकन्दर ने इसे उत्तर-पश्चिम भारत में व्यास नदी तक तथा उत्तर में मध्य एशिया तक फैलाया। परन्तु जब 323 ईसा पूर्व में सिकन्दर की मृत्यु हो गयी, तो उसका साम्राज्य तीन भागों में बँट गया।

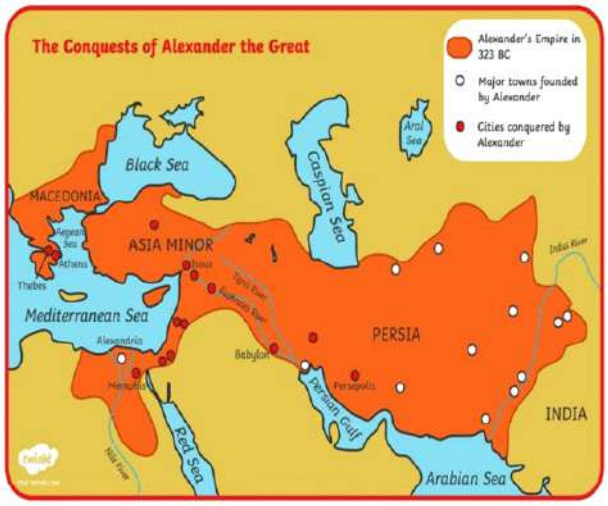

- **रोमन साम्राज्य (Roman Empire)** – इसी समय यूरोप में एक नये साम्राज्य का विस्तार आरम्भ हुआ जिसे रोमन साम्राज्य के नाम से जाना गया। जैसा कि हमने पीछे देखा कि दक्षिणी पूर्वी यूरोप में एक यूनान की सभ्यता स्थापित हो गयी थी, परन्तु चौथी सदी ईसा पूर्व के मध्य में सिकन्दर के पिता फिलिप ने यूनानी नगर राज्यों को जीत लिया था। इसलिए यूनान की सभ्यता साम्राज्य की अवस्था में नहीं पहुँच सकी थी, परन्तु इसके पश्चात् दक्षिणी यूरोप में एक रोमन सभ्यता का विकास हुआ।

- अगर यूनानी लोगों की दृष्टि अधिक बौद्धिक थी तो रोमन लोगों की दृष्टि अधिक व्यावहारिक। इसलिए रोमन लोगों ने एक साम्राज्य का निर्माण किया। आरम्भ में यह एक गणतंत्र था, परन्तु आगे चलकर यह राजतंत्र के रूप में स्थापित हो गया। फिर तीसरी सदी ई. के पश्चात् इसके विशाल आकार को देखते हुये इसका विभाजन पूर्वी रोमन साम्राज्य एवं पश्चिमी रोमन साम्राज्य के बीच हो गया। पश्चिमी रोमन साम्राज्य की राजधानी रोम थी, तो पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया (Constantinople)। परंतु आगे पश्चिमी रोमन साम्राज्य को निरंतर जर्मन आक्रमण का सामना करना पड़ा। इस कारण लगभग 476 ईस्वी में पश्चिमी रोमन साम्राज्य का

विघटन हो गया, जबकि पूर्वी रोमन साम्राज्य लगभग 1000 वर्ष आगे तक चलता रहा।

- **मौर्य साम्राज्य (Mauryan Empire)**– जिस समय यूरोप में रोमन साम्राज्य अस्तित्व में आया, लगभग उसी समय भारत में प्रथम बड़े साम्राज्य के रूप में मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुयी। यह साम्राज्य उत्तर–पश्चिम में हिन्दुकुश क्षेत्र से लेकर दक्षिण में कर्नाटक के ब्रह्मगिरी तक फैला हुआ था। परन्तु यह रोमन साम्राज्य जितना दीर्घजीवी सिद्ध नहीं हुआ तथा दूसरी सदी ईसा पूर्व के मध्य में इसका विघटन हो गया।

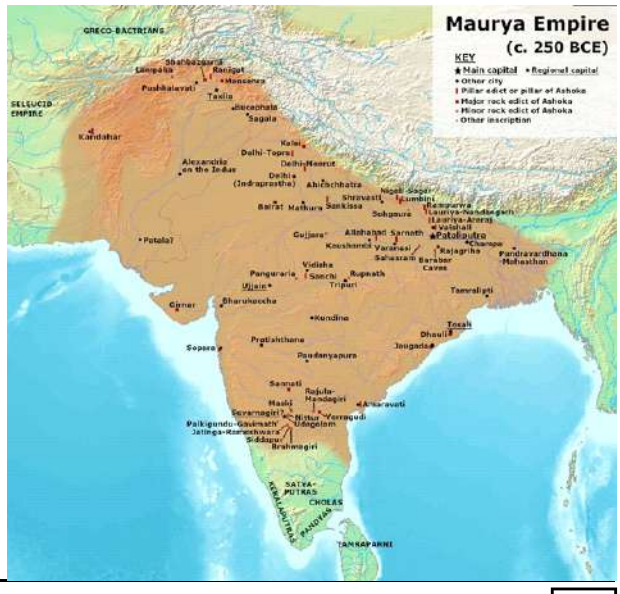

- **कुषाण साम्राज्य (Kushana Empire)**- मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् भारत में अनेक राज्य स्थापित हुए थे, किन्तु इनमें से दो राज्य, साम्राज्य के स्तर तक पहुँच गए- कुषाण एवं सातवाहन। कुषाण साम्राज्य ने एक विशाल आकार ग्रहण किया, जो पश्चिमी एशिया और मध्य एशिया से लेकर उत्तर भारत में बनारस तक फैला हुआ था। यह रेशम मार्ग के एक भाग पर भी नियंत्रण रखता था।

- **हान साम्राज्य (Han Empire)**- लगभग इसी काल में चीन में एक बड़े साम्राज्य, हान साम्राज्य का विकास हुआ। यह चीन का एक महत्वपूर्ण साम्राज्य था। यह दूसरी सदी ईसा पूर्व से दूसरी सदी के बीच लगभग 400 वर्षों तक अस्तित्व में रहा। इसके अन्तर्गत चीन में स्थायित्व एवं समृद्धि आयी। रेशम मार्ग के संचालन में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

■ प्राचीन यूरोप की अर्थव्यवस्था (Economy Ancient Europe) :

- **कृषि अर्थव्यवस्था (Agrarian economy)**- कृषि अर्थव्यवस्था दासों के श्रम पर आधारित थी। (यूरोप में दासों पर आधारित उत्पादन प्रणाली थी, वहीं भारत में दासों को घरेलू कार्य के लिए लगाया जाता था। भारत में दासों पर आधारित उत्पादन प्रणाली नहीं थी।)
- **वाणिज्य-व्यापार और नगरीय अर्थव्यवस्था (Trade & Commerce and Urban economy)**- चूंकि रोमन साम्राज्य का नियंत्रण महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों पर रहा था। इसलिए व्यापार और नगरीय अर्थव्यवस्था विकसित अवस्था में थी। प्रसिद्ध रेशम मार्ग का संचालन इसी काल में हुआ था। तीन साम्राज्यों के द्वारा इसे संरक्षण दिया जाता रहा। यह मार्ग पूरब में चीन को पश्चिम में रोमन साम्राज्य से जोड़ता था तथा यह मार्ग मध्य एशिया से होकर गुजरता था। चीन में हान साम्राज्य, भारत में कुषाण साम्राज्य और पूर्वी यूरोप में रोमन साम्राज्य (विभाजन के पश्चात् पूर्वी रोमन साम्राज्य अथवा बिजेन्टीयन साम्राज्य) इसे संरक्षण देते थे।
- भारत को रेशम मार्ग से विशेष लाभ इसलिए होता था कि रेशम मार्ग के एक भाग पर कुषाणों का भी नियन्त्रण था। फिर चूँकि पश्चिमी रोमन साम्राज्य तथा पूर्वी रोमन साम्राज्य की ईरान के ससानियन साम्राज्य से शत्रुता थी, इसलिए ससानियन साम्राज्य के द्वारा प्रायः यह मार्ग अवरूद्ध कर दिया जाता था। ऐसी स्थिति में चीन से आने वाला रेशम भूमि मार्ग से भारत की ओर मुड़ जाता था और फिर गुजरात के बन्दरगाह से होकर अरब सागर होते हुये रोमन साम्राज्य को भेजा जाता था।
- साथ ही, यह भी गौर करने वाली बात है कि प्राचीन काल से लेकर यूरोपीय औपनिवेशीकरण तक यूरोप और एशिया के बीच होने वाले व्यापार में व्यापार संतुलन हमेशा एशिया के पक्ष में रहा था। इसका कारण रहा था एशियाई उत्पादों के प्रति यूरोप का आकर्षण, दूसरी तरफ, एशिया में यूरोपीय उत्पादों की माँग नहीं होना। इसलिए रोमन साम्राज्य को चीन एवं भारत के उत्पादों की अदायगी कीमती धातु देकर करनी होती थी।

■ प्राचीन यूरोप की सामाजिक स्थिति (Social condition of Ancient Europe):

- प्राचीन यूनानी और रोमन साम्राज्य मुख्यतः दो भागों में विभाजित था- दासों के स्वामी तथा दास। भूमि स्वामी, सामान्यतः दासों के श्रम पर ऐशो-आराम का जीवन जीते थे।

■ प्राचीन यूरोप की धार्मिक स्थिति (Religious condition of Ancient Europe):

- **भारत**- भारत में **वैदिक धर्म** अति प्राचीन धार्मिक पंथ माना जाता रहा है। यह लगभग 1500 ईसा पूर्व से सम्बद्ध रहा था। फिर छठी सदी ईसा पूर्व में कर्मकाण्ड प्रधान वैदिक धर्म के विरूद्ध प्रतिक्रिया के रूप में **बौद्ध एवं जैन पंथ** का उद्‌भव हुआ। बौद्ध पंथ का दृष्टिकोण अधिक रैडिकल (मूल परिवर्तन दृष्टिकोण) था। इसने कुछ ऐसे मूलभूत प्रश्न उठाये जिसने भारत के बाहर के लोगों को भी आकर्षित किया। फिर इसे मौर्य साम्राज्य एवं कुषाण साम्राज्य का भी संरक्षण मिल गया। यही वजह है कि यह विश्व धर्म के रूप में स्थापित हो गया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन, तिब्बत और जापान से होते हुये पश्चिम एशिया और मध्य एशिया तक पहुँच गया।
- **जरथ्रुष्ट पंथ (Zorostrianism)**- इस पंथ का विकास ईरान में हुआ। इसके प्रवर्तक जरथ्रुष्ट नामक चिन्तक थे। इनका मानना था कि विश्व में हमेशा प्रकाश और अंधकार की शक्ति के बीच संघर्ष होता है और जीत, प्रकाश की शक्ति की होती है। इसमें अग्नि पूजा को विशेष महत्व दिया गया था। इसे ईरान के अखमिनी साम्राज्य का संरक्षण मिला था, अतः ईरान में इसका प्रसार हुआ। आगे जब इस्लामी शक्ति की स्थापना के बाद इसके अनुयायियों को उत्पीड़ित किया जाने लगा, तो फिर ये इधर-उधर बिखर गये तथा 8वीं सदी में इनकी एक शाखा भारत भी आयी। वे पारसी के नाम से जाने गये।
- **चीन में ताओवाद एवं कन्फ्युशियसवाद (Taoism and Confucianism in China)**- ये दोनों धार्मिक पंथ लगभग छठी सदी ईसा पूर्व में अस्तित्व में आये। ताओवाद का प्रवर्तक लाओत्से था। यह मानव की सहज प्रकृति तथा प्रकृति सौन्दर्य पर बल देता है। दूसरी तरफ, कन्फ्युशियसवाद एक धार्मिक दर्शन की तुलना में सामाजिक दर्शन अधिक है। जिस समय कन्फ्युशियस का आगमन हुआ था, उस समय चीन उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा था। इसलिए कन्फ्युशियस ने इस बात पर बल दिया कि लोगों को परम्परा का पालन करना चाहिए, पदानुक्रम को समझना चाहिए, माता, पिता एवं गुरू को सम्मान देना चाहिए और अपने जीवन में अनुशासन का पालन करना चाहिए।
- ऐसा माना जाता है कि चीनी लोगों की चेतना पर कन्फ्युशियसवाद का गहरा प्रभाव रहा है। यही वजह है कि चीन में साम्यवाद भी वैश्विक साम्यवाद से पृथक् हो गया। दुनिया में साम्यवादी सरकारों का पतन हो गया है, परन्तु चीन में यह अभी भी बरकरार है क्योंकि कन्फ्युशियस ने लोगों में एक ऐसी मानसिकता विकसित कर दी है कि सत्ता एवं वरिष्ठ जन का सम्मान करना चाहिए।
- **प्राचीन यूनान और रोम के धार्मिक पंथ**- प्राचीन यूनान और रोम में बहुदेववाद (एक से अधिक देवताओं की उपासना) का प्रचलन रहा था। इसके साथ ही मूर्तिपूजा प्रचलित रही थी। प्राचीन यूनान और रोम में बड़ी ही सुडौल मूर्तियाँ बनायी जाती थीं, जहाँ प्राचीन यूनानी देवताओं को प्रतिनिधित्व दिया जाता था। (यूनानी रोमन मूर्तिकला का प्रभाव आगे भारत की गांधार कला पर देखा जा सकता है।) फिर रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत राजाओं की मूर्तियाँ भी बनने लगीं। इन मूर्तियों की पूजा भी की जाती थी। यही कारण है कि आगे रोमन साम्राज्य का पहले यहूदी पंथ और फिर ईसाई पंथ के साथ विवाद हुआ तथा रोमन साम्राज्य के द्वारा उन्हें उत्पीड़ित किया गया।
- **यहूदी पंथ (Judaism)**- यहूदी पंथ का विकास मेसोपोटामिया क्षेत्र में हुआ था। इसके पैगम्बर अब्राहम थे। इन्होंने मेसोपोटामिया से यहूदियों को फिलिस्तीनी क्षेत्र में लाया, लेकिन जब फिलिस्तीनी क्षेत्र रोमन साम्राज्य के नियन्त्रण में आ गया तो फिर रोमन शासकों के द्वारा इन्हें उत्पीड़ित किया जाने लगा। फिर यहूदियों की एक बड़ी संख्या मिस्र की ओर चली गयी, परन्तु वहाँ भी उन्हें उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। फिर मिस्र से मूसा नामक सुधारक उन्हें फिर फिलिस्तीनी क्षेत्र में स्थापित किया। वस्तुतः यहूदी पंथ पश्चिम का पहला ऐसा धार्मिक पंथ था जिसने एकेश्वरवाद (एक ईश्वर एवं निराकार ईश्वर) की अवधारणा को स्वीकार किया था। उन्होंने ईश्वर की परिकल्पना याहवे के रूप में की, परन्तु चूँकि यह मूर्ति पूजा का विरोध करता था, इसलिए रोमन साम्राज्य ने इसे उत्पीड़ित करना आरम्भ किया।
- **ईसाई पंथ (Christianity)**- ईसा मसीह पश्चिम एशिया में जेरुशलम के पास बेथेलहम में पैदा हुये थे। 29 वर्ष की अवस्था में उन्होंने सत्य एवं ईश्वर के विषय में मनन-चिन्तन के लिए रेगिस्तान में अपना कुछ समय बिताया और फिर उन्होंने अपने विचारों को फैलाना आरम्भ किया। उन्होंने भी एकेश्वरवाद पर बल दिया तथा सभी प्रकार के धार्मिक कर्मकाण्ड एवं मूर्ति पूजा का विरोध किया। वे जनसामान्य के बीच रहने लगे और उन्हें बहुत अधिक लोकप्रियता मिलने लगी।
- रोमन साम्राज्य को यह प्रतीत हुआ कि ईसा मसीह उसके विरूद्ध जनसामान्य का विद्रोह संगठित करना चाहते हैं। इसलिए कुछ यहूदी पुरोहित ही उन्हें पकड़ कर ले गये फिर जूडिया के गवर्नर ने उन्हें शूली पर चढ़ा दिया।

आरम्भ में उनके पंथ को पृथक् नहीं समझा गया था, परन्तु उनकी मृत्यु के कुछ समय पश्चात् उनके पंथ को एक पृथक धार्मिक पंथ ईसाई पंथ के रूप में मान्यता मिल गयी। आगे एक रोमन सम्राट कॉन्स्टेनटाईन ने उसे स्वीकृति दे दी। फिर यह रोमन साम्राज्य का राजधर्म बन गया। फिर देखते-देखते यह यूरोप में फैल गया।

मध्यकालीन यूरोप

■ **मध्यकालीन यूरोप की राजनीतिक स्थिति (Political condition of Medieval Europe):**

- जैसा कि हमने देखा कि रोमन साम्राज्य दो भागों में बँट चुका था, पश्चिमी रोमन साम्राज्य एवं पूर्वी रोमन साम्राज्य। फिर जैसा कि हमें ज्ञात होता है कि तीसरी सदी से उत्तर से पश्चिमी रोमन साम्राज्य पर निरन्तर आक्रमण होने लगा था। इस कारण पश्चिमी रोमन साम्राज्य का विघटन हो गया और फिर यूरोप में वर्ण व्यवस्था कायम हुयी, जिसे हम 'सामन्तवाद' के नाम से जानते हैं। वहीं दूसरी तरफ पूर्वी रोमन साम्राज्य आगे एक हजार वर्षों तक चलता रहा तथा आगे 1453 में कुस्तुनतुनिया के पतन के साथ ही उसकी समाप्ति हुयी।
- **सामतंवाद की राजनीतिक-प्रशासनिक विशेषता (Political-Administrative features of feudalism)**- रोमन साम्राज्य के विघटन के पश्चात् राजतंत्र का पतन हो गया तथा जर्मन आक्रमणकारी अपने कबीले के साथ अलग-अलग क्षेत्रों में बस गए तथा क्षेत्रीय स्तर पर अपना शासन स्थापित कर लिया। फिर युद्ध एवं वैवाहिक स्तर पर उनके बीच भी एक पिरामिडनुमा ढाँचा तैयार हो गया जिसके निम्नलिखित प्रकार हैं-

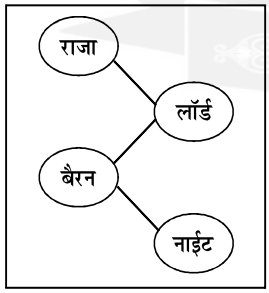

- इस पद्धति के तहत राजा का प्रजा के साथ सीधा संबंध नहीं रह गया, बल्कि ऊपर से नीचे तक एक पिरामिडनुमा ढाँचा तैयार हुआ। राजा लॉर्ड को जागीर देता, बदले में लॉर्ड राजा को सैनिक सेवा प्रदान करता और एकमुश्त वार्षिक रकम देता, ताकि राजा इससे अपना भरण-पोषण कर सके। राजा के पास अपनी सेना नहीं होती। नीचे लगभग यही संबंध लॉर्ड और बैरन के बीच तथा बैरन एवं नाईट के बीच कायम होता। दिलचस्प तथ्य यह था कि राजा सीधे तौर पर बैरन अथवा नाईट के साथ संपर्क नहीं कर सकता था।

■ **मध्यकालीन यूरोप की आर्थिक स्थिति (सामंतवाद का आर्थिक पहलू) (Economic condition of Medieval Europe):**

- रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात् व्यापार एवं नगरीय अर्थव्यवस्था का भी पतन हो गया। फिर सामंतवाद के काल में अर्थव्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताएं उभर कर आई-

यूरोप - सामंतवाद

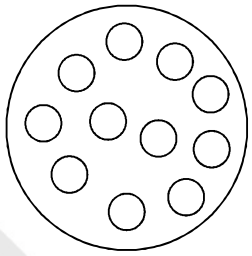

1. अर्थव्यवस्था का ग्रामीणीकरण तथा कृषि अर्थव्यवस्था का महत्व बढ़ गया।
2. अर्थव्यवस्था का क्षेत्रीय रूप विकसित हुआ तथा मुद्रा का प्रचलन अत्यधिक सीमित हो गया।
3. सामंत एवं रैयत दोनों कृषि अर्थव्यवस्था पर ही निर्भर थे। अर्थव्यवस्था के संचालन के लिए सामंतों ने किसानों को भूमि से बाँध दिया। किसान अथवा रैयत भूमि खाली करके नहीं जा सकते थे तथा उन्हें सांमतों के खेत में सप्ताह के कुछ निश्चित दिन मुफ्त रूप में खेती करनी पड़ती थी। इसे कृषि दासता (सर्फडम) कहा गया।

- सामंतवाद एक अखिल यूरोपीय मध्ययुगीन संस्था थी। आगे राष्ट्रीय राज्य का विकास हो, इसलिए इसका टूटना आवश्यक था।

■ **सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था (Universal Church System):**

- ईसा मसीह ने जिस ईसाई धर्म को प्रतिपादित किया था, वह सादा एवं आडम्बर मुक्त था। आगे सेंट पॉल एवं सेंट ऑगस्टाईन जैसे ईसाई संत हुए। इन संतों ने भी ईसाई धर्म को हर प्रकार के आडम्बर से मुक्त रखते हुए यह घोषणा की कि आस्था ही मानव की मुक्ति का साधन है। परंतु कुछ शताब्दियों के बाद दो अन्य संत (पीटर लोम्बार्ड तथा टॉमस एक्वीनॉस) आए, जिन्होंने आस्था के बदले अच्छे कार्य को मानव मुक्ति का साधन बताया। परंतु अच्छे कार्य को उन्होंने अपने ढंग से परिभाषित करते हुए पुरोहितवाद (पादरी) और संस्कारवाद पर बल दिया अर्थात् प्रत्येक ईसाई को पुरोहित (पादरी) का निर्देश मानना और सात

संस्कारों को पालन करना है। इसी के साथ रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था विकसित हुई तथा ईसाई धर्म कर्मकाण्ड प्रधान हो गया। इस व्यवस्था के तहत रोम में चर्च का मुख्यालय स्थापित था और इसकी शाखा संपूर्ण यूरोप में फैली हुई थी। इस व्यवस्था के निम्नलिखित विशेषताएँ थीं-

सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था

1. यह अपने स्वरूप में अखिल यूरापीय (संपूर्ण यूरोप) था।
2. इसके पास बड़ी भूमि संपदा होती।
3. क्षेत्रीय चर्च लोगों पर धार्मिक कर लगाते।
4. शिक्षा एवं ज्ञान पर चर्च का एकाधिकार होता।

- सबसे बढ़कर चर्च व्यवस्था भी सामंतवाद की तरह एक मध्ययुगीन संस्था थी, जो राष्ट्रीय-राज्य के उद्भव तथा यूरोप के आधुनिकीकरण के मार्ग में एक बड़ी बाधा थी। यूरोप के बदलाव के लिए इसका टूटना आवश्यक था।

■ **इस्लाम का उद्भव तथा धर्मयुद्ध (Rise of Islam and Crusades) :**

- अरब क्षेत्र एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई था तथा इसके पूर्व में फारस की खाड़ी, पश्चिम में लाल सागर, दक्षिण में अरब सागर और उत्तर में भूमध्य सागर स्थित था। यह मरूस्थलीय क्षेत्र था, केवल मक्का में एक हरित पट्टी उपलब्ध थी जहाँ खेती होती थी। यहाँ विभिन्न जनजातियाँ बसती थी, इन्हें 'बेदुईन' कहा जाता था। ये ऊँट पालते थे और हथियारबंद होकर चलते थे तथा प्रायः इनके बीच आपस में संघर्ष होता रहता था। ये अर्द्धसभ्य लोग थे। यहाँ शिक्षा का भी प्रसार नहीं हुआ था। छठी सदी में पूर्वी रोमन साम्राज्य और ससानियन साम्राज्य के बीच संघर्ष के कारण जब फारस की खाड़ी का व्यापारिक मार्ग अवरूद्ध हो गया और फिर व्यापार लाल सागर की ओर मुड़ गया, जिसका फायदा अरब जनजातियों को मिला।
- विभिन्न जनजातियाँ अलग-अलग धार्मिक पंथ से जुड़ी थीं। इनमें से कुछ मूर्ति पूजक भी थीं। तभी मुहम्मद का उद्भव एक पैगम्बर के रूप में हुआ और वे 612 ईस्वी से 632 ईस्वी के बीच इस क्षेत्र में एक नये धर्म के प्रसार का प्रयास करते रहे। इसे 'इस्लाम' के नाम से जाना गया। इसके अनुयायी मुसलमान कहलाये। पैगम्बर ने यह घोषित किया कि "ईश्वर एक है, वह है अल्लाह और मुहम्मद उसके पैगम्बर (संदेश वाहक) है"।

(एक तरह से अगर देखा जाये तो इस्लाम के द्वारा प्रतिपादित एकेश्वरवाद उसी अब्राहमी परम्परा से जुड़ा हुआ है जिससे पहले यहूदी और ईसाई जुड़े रहे थे। परन्तु इस्लाम का दृष्टिकोण आगे चलकर इस रूप में कट्टर हो गया कि इसने यह दावा किया कि मुहम्मद ही अन्तिम पैगम्बर है और इनकी वाणी ही सत्य है अर्थात् अगर पिछले पैगम्बरों का विचार मुहम्मद से टकराता है, तो वह स्वयं अप्रभावी हो जायेगा।)

- पैगम्बर मुहम्मद के एकेश्वरवाद का विचार वहाँ के मूर्ति पूजक और कट्टरपंथियों के लिए कष्टकर बन गया। अतः मक्का में पैगम्बर मुहम्मद पर जानलेवा हमला हुआ। इसलिए वे 622 ईस्वी में मदीना आ गये और मदीना में ही उन्होंने शक्ति अर्जित की तथा 630 ईस्वी में उन्होंने मक्का पर भी कब्जा कर लिया। इस प्रकार, इस्लामी राज्य की स्थापना हुयी तथा मदीना और मक्का उसके दो केन्द्र बने। *(इस्लाम में धर्म पहले है तथा समाज और राज्य उसके पश्चात्। यही समस्या आज इस्लामी राज्य को झेलनी पड़ रही है क्योंकि वहाँ उलेमा और कट्टरपंथी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों पर आधारित राष्ट्रीय सीमा को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं।)*
- 632 ई. में पैगम्बर मुहम्मद का देहांत हो गया। उनके पश्चात चार आरम्भिक खलीफा हुये। इन्हें निर्वाचित खलीफा कहा गया, ये थे- अबुबक्र, उमर, उस्मान और अली (632-631 ई.)। इस बीच इस्लाम ने एक बड़े साम्राज्य का रूप ले लिया। इसने मिस्र, सीरिया, ईरान, इराक आदि पुरानी सभ्यताओं और साम्राज्यों को जीत लिया। 661 ई. में खलीफा का पद वंशानुगत हो गया। पहले उम्मैया वंश (661-750 ई.) के खलीफा और फिर अब्बासी खलीफा स्थापित हुये।
- इस बीच स्वयं अरब समुदाय की संरचना तथा इस्लाम का स्वरूप भी बदलने लगा था। इस काल में इस्लाम के अन्तर्गत होने वाले कुछ महत्वपूर्ण विकास को निम्नलिखित रूप में रेखांकित किया जा सकता है-

1. मक्का और मदीना के छोटे से राज्य से आगे बढ़कर इस्लाम ने एक वृहद् साम्राज्य की स्थापना कर ली थी। सामान्यतः इस्लाम के प्रसार के लिए तलवार के सिद्धान्त पर बल दिया जाता है, परन्तु सूक्ष्म परीक्षण करने पर यह ज्ञात होता है कि महज तलवार के आधार पर यह सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती, बल्कि इसमें विचार की शक्ति ने अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। मुस्लिम मिल्लत

(बन्धुता/समानता) की अवधारणा ने विभिन्न समुदायों को आकर्षित किया।

2. अरब क्षेत्र के लोग पहले अर्द्धसभ्य और अशिक्षित थे, परन्तु अपने प्रसार के मध्य वे विश्व की अन्य संस्कृतियों के सम्पर्क में आये, यथा-मिस्र, ईरान, सीरिया और भारत। उन्होंने वहाँ से ज्ञान का संग्रह करने और उस ज्ञान को फैलाने में गहरी रूचि दिखाई। वस्तुतः अब्बासी खलीफाओं के समय बगदाद में एक अनुवाद विभाग स्थापित था तथा भारत समेत दुनिया के अन्य ग्रन्थों, जिनमें प्राचीन यूनानी और रोमन क्लासिकल साहित्य भी शामिल था, का अरबी में अनुवाद किया गया।

(इस्लाम का मूल्यांकन करते हुये इस बात का ध्यान रखने की जरूरत है कि एक समय था कि शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में अरब वालों का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। अरब का पुस्तकालय विश्व का सबसे समृद्ध पुस्तकालय रहा था जिसे चँगेज खाँ के पौत्र हलाकू खाँ ने नष्ट कर दिया था। इस कारण यह क्षति मानव जाति की क्षति मानी जाती है।)

3. पहले अरब जनजाति, मुस्लिम समूह में शामिल हुयी थी फिर पश्चिम एशिया के समुदायों ने इस्लाम कबूल किया। आगे फिर तुर्क और मंगोल भी इसमें शामिल हो गये। अपने प्रसार के क्रम में इस्लाम ने उत्तरी अफ्रीका, पश्चिम एशिया, मध्य एशिया, पूर्वी एशिया और दक्षिण एशिया तक अपना प्रसार किया। इस प्रकार, इस्लाम ने पहली ग्लोबल व्यवस्था कायम की जो 7वीं सदी से 15वीं सदी तक चली थी। *(इसलिए कोलम्बस और वास्कोडिगामा के द्वारा वैकल्पिक मार्ग की खोज का प्रतीकात्मक अर्थ था इस्लामी भूमण्डलीकरण का अंत और ईसाई भूमण्डलीकरण का आरम्भ, जो 15वीं सदी से 2000 ई. तक चलना था।)*

- **इस्लामी एवं ईसाई शक्ति के बीच धर्म युद्ध अथवा क्रुसेड**- इस्लामी शक्ति ने अपने प्रसार के क्रम में लगभग सम्पूर्ण विश्व को जीत लिया था, केवल पश्चिमी यूरोप के देश बचे रहे थे। आगे इन्होंने जेरूशलम पर कब्जा करने के लिए आपस में गठबन्धन बनाकर इस्लामी शक्ति का सामना किया। इसे 'क्रुसेड' अथवा 'धर्मयुद्ध' के नाम से जाना गया। 1095 और 1291 ई. के बीच तीन प्रमुख धर्मयुद्ध घटित हुये थे।

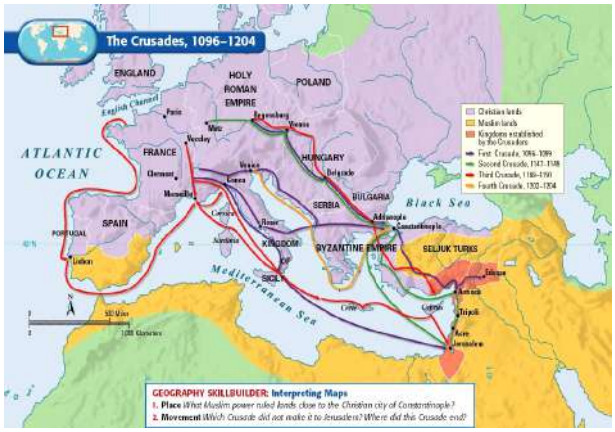

■ मध्यकालीन यूरोपीय समाज (Society of Medieval Europe):

- मध्यकालीन यूरोपीय समाज तीन वर्गों में विभाजित था-

1. **कुलीन वर्ग (Aristocratic class)**- सामंत कुलीन समाज के शीर्ष पर थे। इनके पास भूमि संपदा होती थी तथा इन्हें वर्गीय विशेषाधिकार प्राप्त था।
2. **पादरी वर्ग (Clergy class)**- सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था की स्थापना के पश्चात् एक पादरी वर्ग अस्तित्व में आ चुका था, उसे भी वर्गीय विशेषाधिकार प्राप्त था। फिर चूंकि चर्च के पास भूमि संपदा होती थी। अतः यह चर्च के नाम पर स्वयं ही भूमिधारी बन बैठा था।
3. **जनसामान्य (Commoners)** - इसमें सभी अन्य लोग शामिल होते थे, यथा- किसान, शिल्पी एवं कारीगर, छोटे व्यापारी आदि। यह समाज का विशेषाधिकार विहीन वर्ग होता था तथा इसे सभी प्रकार का कर चुकाना होता था।

■ पवित्र रोमन साम्राज्य (Holy Roman Empire):

- जर्मन जनजातियों ने रोमन साम्राज्य के विघटन के पश्चात् विभिन्न क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था। इनमें एक जनजाति फ्रेंकों जनजाति थी, जिसने गॉल क्षेत्र पर कब्जा किया। इसी जनजाति समूह से एक शक्तिशाली राजवंश कैरोंलिन्जियन वंश की स्थापना हुई। इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक शार्लमां था। उसने यूरोप में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी, जो उत्तरी यूरोप से लेकर दक्षिणी यूरोप तक फैला हुआ था। इसकी शक्ति देखकर रोम का पोप इसकी ओर आकर्षित हुआ तथा 8वीं सदी के अंत में अपने हाथ से राजमुकुट लेकर उसके सर पर रखते हुए यह घोषित किया कि आप पवित्र रोमन सम्राट हैं। अतः शार्लमां का साम्राज्य पवित्र रोमन साम्राज्य कहा जाने लगा। इस साम्राज्य का जुड़ाव ईसाई धर्म के साथ हो चुका था।

आरंभ में इसने धर्मयुद्ध में भूमिका निभाई तथा फिर यह रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था के रक्षक के रूप में कार्य करता रहा।

- सामंतवाद और सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था की तरह यह भी एक अखिल यूरोपीय संस्था थी तथा यूरोप के आधुनिकीकरण एवं बदलाव के लिए इसका विघटन भी आवश्यक था। था।

■ मध्ययुगीन यूरोपीय व्यवस्था के लक्षण (Features of Medieval Europe)-

1. **राजनीतिक क्षेत्र में सामंतवाद**- यह एक विकेन्द्रीकृत व्यवस्था थी जिसमें राजा की शक्ति कमजोर थी तथा वास्तविक शक्ति सामंतों के हाथों में थी।
2. **आर्थिक क्षेत्र में कृषि दासता पर आधारित व्यवस्था**- इस व्यवस्था के तहत यूरोपीय अर्थव्यवस्था अपने स्वरूप में क्षेत्रीय हो गई थी। व्यापार की भूमिका सीमित थी और मुद्रा का प्रचलन बहुत ही कम था।
3. **सामाजिक क्षेत्र में वर्गीय विशेषाधिकार पर बल**- कुलीन वर्ग और पादरी वर्ग के पास भूमि संपदा थी और जनसामान्य उससे वंचित थे।
4. **धार्मिक क्षेत्र में सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था**- सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन पर चर्च का विशेषाधिकार था। शिक्षा पर भी चर्च का एकाधिकार था। चर्च रूढ़िवादी तर्कशास्त्र को प्रोत्साहन दे रहा था। इसके अनुसार, मनन और चिंतन ही ज्ञान प्राप्त करने का साधन है। इस आधार पर चर्च ने यह घोषित किया कि इस ब्रह्माण्ड के मूल में पृथ्वी है और सारे गृह एवं नक्षत्र पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं।

प्रश्न : उन कारकों की व्याख्या कीजिए जिनके परिणामस्वरूप यूरोप का मध्ययुग से आधुनिक युग में रूपांतरण संभव हुआ।

प्रश्न-विश्लेषण:- यह प्रश्न अपने स्वरूप में Hypothetical है। इसमें Keyword हैं– 'मध्य युग से आधुनिक युग में रूपांतरण' तथा Directory word है 'व्याख्या कीजिए'। आप उत्तर की शुरुआत एक सटीक परिचयात्मक वाक्य (Introductory Sentence) से कर सकते हैं। अगली पंक्ति में एक 'थेसिस वाक्य' (Thesis Statement) दिया जाना चाहिए। 'थेसिस वाक्य' दर्शाता है कि संपूर्ण उत्तर की दिशा क्या होगी। आगे विचारों, तथ्यों एवं उदाहरणों की सहायता से 'थेसिस वाक्य' को सिद्ध करने की जरूरत है। फिर एक वाक्य में एक निष्कर्ष दिया जाना चाहिए। सामान्य अध्ययन के पत्र में थेसिस वाक्य को सिद्ध करने वाले तर्क एवं विचार छोटे पैराग्राफ में लिखे जा सकते हैं या फिर प्वॉइंट में। लेखन के मध्य कुछ महत्वपूर्ण शब्द या फिर किसी पंक्ति विशेष को उसी पेन की सहायता से रेखांकित किया जा सकता है। आपका कुल प्रयास यह होना चाहिए कि आपके उत्तर का मूल्यांकन परीक्षक के लिए सुगम हो सके। यह तभी संभव होगा जब विचार एवं अभिव्यक्ति में स्पष्टता हो।

मॉडल उत्तर:- मध्य युग से आधुनिक युग में रूपांतरण के मार्ग में बाधाएँ तीन प्रमुख संस्थाएं थीं, यथा- सामंतवाद, यूरोपीय चर्च व्यवस्था एवं पवित्र रोमन साम्राज्य। जब इन तीनों संस्थाओं का विघटन हुआ, तो फिर आधुनिक युग का आगमन संभव हुआ।

निम्नलिखित कारकों ने इन संस्थाओं के विघटन को संभव बनाया–

- कृषि के क्षेत्र में तकनीकी सुधार तथा व्यावसायिक क्रांति के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र में मुद्रा का प्रवेश हुआ। अत: सामंती ढाँचा चरमराने लगा। एक तरफ सामंतवाद के पतन के पश्चात् पूंजीवाद का विकास हुआ, तो दूसरी तरफ इस स्थिति का फायदा उठाकर यूरोप के महत्वाकांक्षी शासकों ने अपने को पुनर्स्थापित किया।
- उसी प्रकार, प्रोटेस्टेंट आंदोलन ने अखिल यूरोपीय चर्च व्यवस्था को विघटित कर दिया। इसके पश्चात् ही राष्ट्रीय राज्य का उत्थान संभव हुआ।
- अंत में, तीस वर्षीय युद्ध के परिणामस्वरूप पवित्र रोमन साम्राज्य का विघटन हुआ तथा आधुनिक राज्य व्यवस्था की शुरुआत हुई। वस्तुत: वेस्टफेलिया की संधि के साथ यूरोपीय राज्यों के संबंध बदल गए।

इस प्रकार यूरोप का मध्य युग से आधुनिक युग में रूपांतरण संभव हुआ।

■ यूरोप में आधुनिकता का आगमन (Emergence of modernity in Europe) :

- आधुनिकता के लिए परिवर्तन आवश्यक था और परिवर्तन के प्रक्रम को समझने के लिए निम्नलिखित फॉर्मूला का उपयोग किया जा सकता है-

आर्थिक परिवर्तन ⟶ वर्गीय समीकरण में परिवर्तन (सामाजिक परिवर्तन) ⟶ वैचारिक परिवर्तन ⟶ राजनीतिक परिवर्तन ⟶ (आगे परिवर्तन का यही क्रम चलता रहता है)

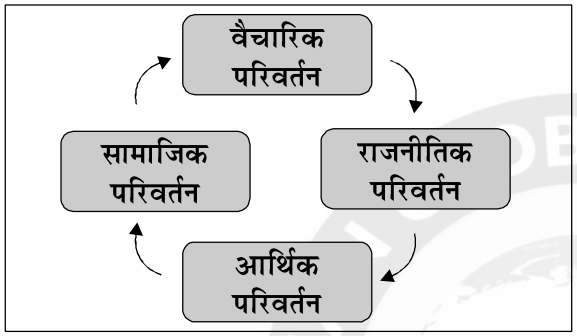

- सामान्यत: बदलाव को समझने के लिए परिवर्तन के क्रम को समझना आवश्यक है। जब आर्थिक परिवर्तन घटित होता है तो वर्गीय समीकरण में परिवर्तन आ जाता है क्योंकि इसके परिणामस्वरूप एक वर्ग का वर्चस्व टूटता है और दूसरे वर्ग का वर्चस्व स्थापित हो जाता है। इससे वैचारिक परिवर्तन का रास्ता तैयार होता है क्योंकि पहले जो प्रभावी वर्ग था उसके पतन के साथ उसकी विचारधारा का प्रभाव भी सीमित हो जाता है और फिर एक नव-स्थापित वर्ग की विचारधारा कहीं अधिक प्रभावी हो जाती है। इससे वैचारिक परिवर्तन का मार्ग तैयार होता है। फिर वैचारिक परिवर्तन राजनीतिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देता है और इस प्रकार परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रहती है।
- अत: ऐसा माना जाता है कि आधुनिक पश्चिम के उद्‌भव में व्यापारिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसे 'व्यावसायिक क्रांति' के नाम से जाना गया।

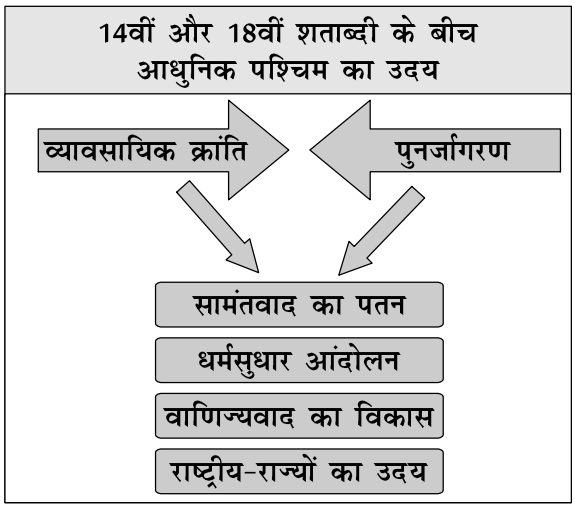

■ व्यावसायिक क्रांति (Commercial Revolution):

- व्यावसायिक क्रांति के परिणामस्वरूप यूरोप की क्षेत्रीय, स्थिर एवं सामंती अर्थव्यवस्था वैश्विक, गतिशील एवं पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में रूपांतरित हो गई। एक बार फिर व्यापार एवं नगरीय अर्थव्यवस्था का उत्थान हुआ तथा मुद्रा एवं बैंकिंग का विकास हुआ।

- **व्यापार के उत्थान या व्यावसायिक क्रांति के कारण (Factors behind growing commercial activities):**

1. **तकनीकी विकास (Technological innovation)**- कृषि क्षेत्र में तकनीकी विकास के कारण कृषि अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिला तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप एक संपन्न भूमिधारी वर्ग स्थापित हुआ जिसने वस्तुओं की माँग बढ़ा दी।
2. **धर्मयुद्ध (Crusades)**- धर्मयुद्ध जैसी विध्वंसात्मक घटना ने भी यूरोप की अर्थव्यवस्था पर संरचनात्मक प्रभाव छोड़ा। जब यूरोप के ईसाई देशों की सेना पूरब से धर्मयुद्ध लड़ने के लिए पश्चिम एशिया के येरूशलम की ओर गई तो इसके साथ ही उत्तरी-पश्चिमी यूरोप और पश्चिमी एशिया के बीच का व्यापारिक मार्ग खुल गया।
3. **कुस्तुनतुनिया का पतन (Decline of Constantinople)**- सबसे बड़ी विध्वंसात्मक घटना सिद्ध हुई कुस्तुनतुनिया का पतन, परंतु यह यूरोप में आधुनिक युग के आगमन का सूचक बन गई। 1453 ई. में ओटोमन तुर्क के अधीन मुस्लिम शक्ति ने पूर्वी रोमन साम्राज्य को पराजित कर उसकी राजधानी कुस्तुनतुनिया पर कब्जा कर लिया। इसके कारण भारत और यूरोप के बीच जितने भी व्यापारिक मार्ग थे, सभी ठप हो गए, जबकि यह वह काल था जब यूरोप में पूरब से आने वाले मसालों की अत्यधिक माँग थी। दूसरी तरफ, मुस्लिम शक्ति ने यूरोपीय देशों को उनकी सीमाओं में कैद कर

दिया था। परंतु यह भी एक समय था कि जब यूरोप ने अपनी आंतरिक ऊर्जा दिखाते हुए इस चुनौती को स्वीकार किया और वैकल्पिक मार्ग की खोज आरंभ कर दी। इस दिशा में सर्वप्रथम पुर्तगाल और स्पेन ने पहल की और इसी क्रम में कोलम्बस ने 1492 में अमेरिका और वास्कोडिगामा ने 1498 में भारत के वैकल्पिक मार्ग की खोज की।

- नए क्षेत्रों की खोज के साथ उन क्षेत्रों में यूरोपीय व्यापार का विस्तार हुआ। इसे व्यावसायिक क्रांति के नाम से जाना गया। अमेरिका की खोज एक आकस्मिक घटना थी, परंतु यूरोपीय अर्थव्यवस्था के लिए व्यापक महत्व था क्योंकि भारत एवं पूर्वी देशों से खरीदे गए वस्तुओं के बदले यूरोपीय व्यापारी अमेरिकी महाद्वीप से प्राप्त कीमती धातु दे पाते थे। इस तरह अमेरिकी धातु के माध्यम से ही यूरोपीय देश पूर्वी व्यापार का संचालन कर सके।

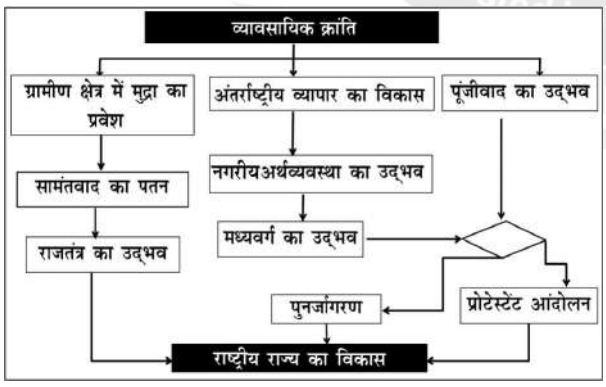

- **व्यावसायिक क्रांति का प्रभाव (Impact of Commercial Revolution)** : जैसाकि हमने देखा कि व्यावसायिक क्रांति ने यूरोप में संरचनात्मक परिवर्तन लाया और फिर इस परिवर्तन ने आगे के परिवर्तनों का रास्ता तैयार कर दिया। ये परिवर्तन इस प्रकार हैं –

1. **सामंतवाद का पतन (Decline of Feudalism)**– जैसा कि हम जानते हैं सामंतवाद का आर्थिक आधार कृषि दासता तैयार कर रही थी। अत: यह स्पष्ट था कि यदि कृषि दासता का पतन होता, तो सामंती संरचना का भी विघटन हो जाता है। फिर जैसा कि हम देखते हैं कि जब ग्रामीण क्षेत्र में मुद्रा का प्रवेश हुआ तो कृषि दासता टूटने लगी। वस्तुत: सामंतों के द्वारा किसानों को जीवन-यापन करने के लिए थोड़ी सी जमीन दी गई थी और बदले में उन्हें सामंतों की जमीन पर मुफ्त में श्रम देना होता था परंतु अब जब मुद्रा का प्रवेश हुआ तो फिर सामंत और रैयत दोनों मुद्रा की तरफ आकर्षित हो गए। रैयतों को यह लगा कि अगर थोड़ी सी रकम के बदले सामंत हमें सेवा की शर्तों से मुक्त कर देते हैं तो हम अपने श्रम को बाजार में बेचकर मुनाफा कमा सकते हैं, वहीं सामंतों को भी ऐसा महसूस हुआ कि रैयत उन्हें सेवा के बदले रकम देते, तो बेहतर है। अत: कृषि दासता टूट गई।

2. **यूरोपीय राजतंत्र का उत्थान (Rise of Autocratic Monarchy in Europe)** – सामंतों के उद्भव के कारण राजा की स्थिति कमजोर हो चुकी थी। अब वह पूर्णत: सामंतों पर निर्भर हो गया था, परंतु जब सामंतवाद का पतन हुआ तो यूरोप के महत्वाकांक्षी शासक अपने आप को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करने लगा। इन शासकों में ब्रिटिश शासक हेनरी षष्टम, हेनरी अष्टम, फ्रांस का हेनरी चतुर्थ और आगे प्रशा के फ्रैडरिक द ग्रेट तथा ऑस्ट्रिया के जोसेफ-II आदि प्रमुख थे।

3. **पूँजीवाद का उद्भव (Rise of Capitalism)** – पूँजीवाद अपने स्वरूप में सामंतवाद से पृथक् था। सामंतवाद का आधार कृषि अर्थव्यवस्था थी, तो पूँजीवाद का आधार व्यापार। उसी प्रकार, सामंतवाद परंपरा तथा व्यक्तिगत वफादारी के आधार पर संचालित होता था, तो पूँजीवाद मुनाफे के आधार पर। इसके अतिरिक्त, सामंतवाद का सामाजिक आधार कुलीन वर्ग एवं चर्च ने तैयार किया, तो पूँजीवाद का आधार मध्यवर्ग ने।

4. **मध्यवर्ग का उद्भव (Rise of Middle Class)**– मध्यकालीन यूरोपीय समाज तीन भागों में विभाजित था– कुलीन वर्ग, पादरी वर्ग तथा जनसामान्य। परंतु व्यावसायिक क्रांति ने एक नया सामाजिक वर्ग, व्यापारिक वर्ग को जन्म दिया। व्यापारिक वर्ग ने ही आरंभिक मध्यवर्ग का रूप ले लिया। आगे इस वर्ग में अनेक समूह जुड़ते चले गए।

- गौर करने वाली बात यह है कि पहले जहाँ यूरोपीय समाज कुलीन वर्ग और पादरी वर्ग के हित से परिचालित हो रहा था, वहीं अब यह मध्य वर्ग के हित से परिचालित होने लगा। चूँकि इस वर्ग के पास आर्थिक क्षमता थी, इसलिए इस वर्ग ने बदलाव को संभव बनाया। थोड़े काल के लिए उभर रहे यूरोपीय राजतंत्र का हित मध्य वर्ग से जुड़ गया।

पुनर्जागरण (Renaissance)

- पुनर्जागरण (नवीन विचारधारा) यूरोप के इतिहास में एक वैचारिक विकास को दर्शाता है। इसके लिए जटिल परिस्थितियाँ तथा एक से अधिक कारक उत्तरदायी थे। भौगोलिक खोज के परिणामस्वरूप पश्चिमी एवं पूर्वी संस्कृतियों के बीच आदान-प्रदान तथा नए विचारों का उद्भव हुआ। इसे नवोदित मध्यवर्ग का समर्थन मिला। फिर प्रिंटिंग प्रेस के कारण नवीन विचारों का तेजी से प्रसार हुआ। पुनर्जागरण एक मनोदशा अथवा दृष्टिकोण था, यह कोई बौद्धिक क्रांति नहीं थी। इसका बल निम्नलिखित कारकों पर रहा था-
- **उत्सुकता एवं खोजी दृष्टि (Curiosity and the spirit of enquiry)**- सांसारिक जीवन की ओर आकर्षण ने विद्वानों में एक नवीन प्रकार की उत्सुकता को प्रेरित किया। इससे वैज्ञानिक अन्वेषण को प्रोत्साहन मिला। इस काल में न्यूटन, गैलेलियो, कोपरनिकस आदि वैज्ञानिक आये। जब न्यूटन ने फल को नीचे गिरते देखा तो उसने उत्सुकता से प्रेरित होकर गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा की खोज की।
- **साहसिक मनोभाव का उद्भव (Spirit of adventure)**- मानव के बढ़ते हुये महत्व ने उसमें साहसिक मनोभावों को बल प्रदान किया। इससे भौगोलिक खोज को प्रोत्साहन मिला।
- **मानववाद (Humanism)**- ईश्वर के समानांतर मानव का महत्व बढ़ गया तथा पारलौकिकता के समानांतर इहलौकिकता (इस संसार को महत्व देना) को महत्व दिया गया।
- **व्यक्तिवाद (Individualism)**- व्यक्तिवाद से तात्पर्य है व्यक्ति की निजी पहचान, उसके व्यक्तिगत सुख-दुख को समझना। इस काल में पहली बार आत्मकथा लिखी जाने लगी। उदाहरण के लिए, सेलीनी नामक लेखक ने पहली बार अपनी आत्मकथा लिखी।
- **धर्मनिरपेक्षता (Secularism)**- यहाँ धर्म निरपेक्षता से तात्पर्य है उन पादरियों की आलोचना, जिनकी कथनी और करनी में अंतर है। अतः लोगों के मस्तिष्क पर धर्म का प्रभाव कम हुआ। इस प्रकार पुनर्जागरण ने यूरोप में नवीन संस्कृति को प्रोत्साहन दिया।

■ पुनर्जागरण का प्रभाव (Impact of Renaissance):

- वस्तुतः मानववाद, व्यक्तिवाद और धर्मनिरपेक्षता का तत्व यूरोपीय सभ्यता का मूल स्वर बन गया जो पुनर्जागरण काल के शेक्सपीयर, क्रिस्टोफर मार्लो, सर्वेन्तिस की रचनाओं, माइकल एजेंलो, राफेल, लियोनार्दो द विंची आदि की चित्रकला तथा मैकियावेली के राजनीतिक दर्शन आदि में व्यक्त हुआ है।
- धर्मनिरपेक्षता के विचार ने प्रोटेस्टेंट आंदोलन को प्रोत्साहन दिया।

■ धर्मसुधार आंदोलन (Reformation Movement):-

पुनर्जागरण के समानान्तर एक और उत्थान देखा गया जिसकी पहचान धर्मसुधार आंदोलन के रूप में हुई। इसके प्रायः दो रूप देखे जाते हैं -

1. **प्रति धर्मसुधार आंदोलन (Couter-Reformation Movement)**- प्रतिधर्म सुधार आन्दोलन का उद्देश्य रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था में सुधार लाकर उसे मजबूत बनाना था।
2. **प्रोटेस्टेंट आंदोलन (Protestant Movement)** - प्रोटेस्टेंट आंदोलन की शुरुआत मार्टिन लूथर ने की थी जो कि विटेनबर्ग के गिरजाघर में एक स्थानीय पुजारी थे। इसने रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था को ही अस्वीकार कर दिया। इसका कहना था कि रोमन कैथोलिक धर्म को पीछे जाकर आरंभिक संतों की शिक्षा से जुड़ना चाहिए जो आस्था की बात करते थे। वस्तुतः रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था का आधार ईसाई संत पीटर लोम्बार्ड और टॉमस एक्वीनॉश की शिक्षा पर आधारित था जबकि प्रोटेस्टेन्टों का कहना था कि ईसाई धर्म को उसके मूल स्वरूप की ओर लौटना चाहिए। इसलिए प्रोटेस्टेन्ट सुधारकों ने सेंट पॉल और सेंट ऑगस्टाईन की शिक्षा पर बल दिया। वस्तुतः यूरोप आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा था, फिर धर्म का क्षेत्र अछूता कैसे रह सकता था।

- फिर अन्य क्षेत्रों में भी कई अन्य सुधारक सक्रिय हो गए। उदाहरण के लिए, जर्मनी में कैल्विन, स्विट्जरलैंड के क्षेत्र में ज्युंगली आदि सुधारक आए। फिर प्रोटेस्टेंट पंथ ने अलग-अलग क्षेत्रों में पृथक-पृथक नाम ग्रहण किए। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में ये प्यूरिटन कहलाए।
- अगर हम प्रोटेस्टेंट आंदोलन के कारणों पर विचार करते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि इसका एक कारण धार्मिक भ्रष्टाचार अवश्य था, परंतु आर्थिक एवं राजनीतिक कारण उससे भी अधिक निर्णायक सिद्ध हुए।
- **धार्मिक कारण (Religious factor)**:- रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था में धार्मिक भ्रष्टाचार घर कर गया था। नियमों के अनुसार पादरियों को ब्रह्मचर्य रहने की

शपथ लेनी होती थी, परन्तु व्यवहार में वे इसका उल्लंघन करते थे। फिर धार्मिक भ्रष्टाचार का सबसे उग्र रूप था मुक्ति पत्र की बिक्री (Sale of indulgences)।

- **आर्थिक कारण (Economic factor):-** रोमन कैथोलिक चर्च के द्वारा मुनाफा अर्जन और ब्याज लेने को अनैतिक करार दिया गया था, वहीं प्रोटेस्टेंट पंथ ने उन्हें स्वीकृति प्रदान कर दी। इससे व्यापार को फायदा मिला। अत: व्यापारी वर्ग अथवा मध्यवर्ग का समर्थन प्रोटेस्टेंट आंदोलन को मिल गया। जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने अपनी पुस्तक 'Protestant Ethics and Spirit of Capitalism' में यूरोप में पूंजीवाद के उद्भव का श्रेय प्रोटेस्टेंट पंथ को दिया है। उनका यह भी मानना है कि भारत में पूंजीवाद के पिछड़ने का कारण यहाँ के धार्मिक पंथ में आर्थिक गतिशीलता का न होना है, जो यूरोप के प्रोटेस्टेंट धर्म में था (परंतु यह मत स्वीकार्य नहीं है)।
- **राजनीतिक कारण (Political factor):-** यह वह काल था जब सामन्तवाद के विघटन के पश्चात् यूरोपीय राजतंत्र का विकास हो रहा था तथा यूरोप के महत्वाकांक्षी शासकों के द्वारा अपनी राष्ट्रीय सीमा खींची जा रही थी। परन्तु इसके मार्ग में एक बड़ी बाधा थी सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था। इसके तहत क्षेत्रीय चर्च राजतंत्र की अधीनता और राष्ट्रीय सीमा को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे और वे अपने को सीधा रोम के अधीन मानते थे। अत: यूरोप के कुछ महत्वाकांक्षी शासकों की सोची-समझी योजना के तहत प्रोटेस्टेंट धर्म को प्रोत्साहन दिया गया।

प्रोटेस्टेंट आंदोलन का प्रभाव (Impact of Protestent Povement):

1. **राष्ट्रीय-राज्य का उद्भव (Rise of nation-state)**- इसने सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था में विभाजन उत्पन्न कर राष्ट्रीय-राज्य के उद्भव का रास्ता तैयार कर दिया क्योंकि एक मध्य युगीन संस्था सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी थी।
2. **पूँजीवाद का विकास (Rise of capitalism)**- इसने व्यापार और व्यापारी वर्ग को समर्थन देकर पूँजीवाद को प्रोत्साहन दिया।

प्रश्न:- क्या प्रोटेस्टेंट आंदोलन महज धार्मिक कारक की उपज था?

प्रश्न-विश्लेषण:- यह प्रश्न अपने स्वरूप में Argumentative है। इसमें पहले अपने झुकाव (Stand) को स्पष्ट करना है। इसमें Keywords हैं 'महज', 'धार्मिक कारक'।

उत्तर:- प्रोटेस्टेंट आंदोलन, रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था के विरुद्ध एक विद्रोह था। इसमें धार्मिक कारक की निश्चय ही भूमिका रही थी। कहा जाता है रोमन कैथोलिक चर्च व्यवस्था में अनेक प्रकार के धार्मिक भ्रष्टाचार विद्यमान थे, यथा– ब्रह्मचर्य रहने की शपथ का उल्लंघन, मुक्ति-पत्र की बिक्री आदि।

परन्तु यह भी सत्य है कि प्रति-धर्मसुधार आंदोलन (Counter-reformation movement) के प्रभाव में चर्च के अंतर्गत आंतरिक सुधार की प्रक्रिया आरंभ हो गई थी। अत: प्रोटेस्टेंट आंदोलन नहीं भी होता, तो भी सुधार संभव था, फिर भी अगर प्रोटेस्टेंट आंदोलन घटित हुआ तो इसका मुख्य कारण आर्थिक एवं राजनीतिक था।

- **आर्थिक कारक**- व्यापार की प्रगति के लिए महाजनी एवं मुनाफाखोरी की स्वीकृति आवश्यक थी, जबकि रोमन कैथोलिक चर्च उनकी आलोचना कर रहा था। इसलिए व्यापारी वर्ग का समर्थन प्रोटेस्टेंटों को मिला।
- **राजनीतिक कारक**- राष्ट्रीय-राज्य के निर्माण के लिए क्षेत्रीय चर्च का राज्य के अधीन किया जाना आवश्यक था। इसे प्रोटेस्टेंट आंदोलन ने आसान बना दिया। फिर यूरोप के महत्वाकांक्षी शासकों ने इसका फायदा अपने पक्ष में उठाया।

अत: हम यह कह सकते हैं कि प्रोटेस्टेंट आन्दोलन में निर्णायक भूमिका आर्थिक एवं राजनीतिक कारकों ने निभायी।

■ वाणिज्यवाद का उद्भव (Rise of Mercantilism):

- 17वीं सदी तक व्यावसायिक क्रांति के स्वरूप में बदलाव आने लगा। अब तक व्यावसायिक क्रांति ने व्यापारिक वर्गों के हित में काम किया, परंतु अब यह राज्य एवं राजतंत्र के हितों से जुड़ गया। अत: अब यह 'वाणिज्यवाद' के नाम से जाना जाने लगा। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि वाणिज्यवाद एक आर्थिक कार्यक्रम था, परंतु यह एक राजनीतिक उद्देश्य से भी प्रेरित था - इसका उद्देश्य था राजा एवं राजतंत्र को शक्तिशाली बनाना।
- अब यूरोप के महत्वाकांक्षी राजतंत्र ने अर्थव्यवस्था को दिशा देना आरंभ कर दिया। उनका मानना था कि अगर राज्य के पास संसाधन अधिक होंगे, तो फिर वे कर के माध्यम से अधिक-से-अधिक रकम प्राप्त कर सकेंगे। इस रकम का उपयोग वे स्थायी सेना तथा स्वतंत्र नौकरशाही को स्थापित करने के लिए कर सकते थे। इसलिए उनका बल राष्ट्र के संसाधनों को बढ़ाने पर रहा। इसके लिए उन्होंने निम्नलिखित कदम उठाए -

1. उपनिवेशों से कीमती धातुओं का संग्रह करना क्योंकि उस समय की सामान्य मान्यता यह थी कि जिस राज्य के पास जितनी अधिक कीमती धातु होती है, वह उतना ही

अधिक शक्तिशाली होता है।

2. व्यापार संतुलन अपने पक्ष में करना- उनका बल इस बात पर था कि हम निर्यात अधिक करें और आयात कम, ताकि व्यापार संतुलन हमारे पक्ष में बना रहे। इसके लिए वे कृत्रिम उपायों का सहारा लेते थे।

3. नए-नए क्षेत्रों में उपनिवेश स्थापित करना- उपनिवेशवाद की यह मान्यता थी कि उपनिवेश मातृ देश के हित के लिए अपना अर्थ रखता है। इसी मान्यता के तहत यूरोपीय देशों ने नए-नए क्षेत्रों की खोज की तथा वहाँ उपनिवेश स्थापित किए। औपनिवेशीकरण की दिशा में स्पेन और पुर्तगाल आगे थे, फिर ब्रिटिश, फ्रांसीसी और डच भी शामिल हो गए।

- वाणिज्यवाद के काल में व्यापारी वर्ग अथवा मध्यवर्ग ने राजतंत्र के प्रति सहयोग की नीति अपनायी, वहीं राजतंत्र ने उभरते हुए मध्यवर्ग के सहयोग से सामन्त-कुलीनों के विरूद्ध अपनी स्थिति मजबूत की। इसलिए हम वाणिज्यवाद को राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित एक आर्थिक कार्यक्रम मानते हैं।

■ राष्ट्रीय-राज्य की स्थापना एवं निरंकुश राजतंत्र का उद्भव (Emergence of Nation-State & Rise of Autocratic Monarchy):

- राष्ट्रीय-राज्य की स्थापना एवं निरंकुश राजतंत्र का उद्भव उन आर्थिक सामाजिक परिवर्तनों का परिणाम था जिनसे 18वीं सदी का यूरोप गुजर रहा था। इस प्रक्रिया को निम्नलिखित कारकों से प्रेरणा मिली थी-

1. **सामंतवाद का विघटन (Decline of feudalism):-** इसका लाभ यूरोप के महत्वाकांक्षी शासकों ने अपने पक्ष में करना चाहा और अपनी स्थिति मजबूत की।

2. **प्रोटेस्टेन्ट आन्दोलन की भूमिका (Role of Protestant Movement):-** इसने सर्वव्यापी चर्च व्यवस्था में दरार उत्पन्न कर दी। इसका फायदा उठाकर महत्वाकांक्षी शासकों ने क्षेत्रीय चर्च को अपने अधीन कर लिया।

3. **वाणिज्यवाद (Mercantilism):-** वाणिज्यवाद ने राष्ट्रीय-राज्य का आर्थिक आधार मजबूत किया। इसका लाभ उठाकर यूरोप के महत्वाकांक्षी शासकों ने आधुनिक कर प्रणाली स्थापित की तथा स्थायी सेना एवं स्वतंत्र नौकरशाही का गठन किया।

- इस काल में विभिन्न प्रतिष्ठित राजवंशों की स्थापना हुयी। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में ट्यूडर वंश, फ्रांस में बूर्बो वंश, ऑस्ट्रिया में हैब्सबर्ग वंश, रूस में रोमनाव वंश आदि। फिर, महत्वाकांक्षी शासकों में फ्राँस के लुई- 13वें एवं 14वें, ब्रिटेन के हेनरी सप्तम, रूस की कैथरीन द्वितीय आदि की चर्चा की जा सकती है।

4. **पुनर्जागरण (Renaissance):-** पुनर्जागरण के फलस्वरूप पुराने रोमन कानूनों को नवजीवन मिला। इन कानूनों में साम्राज्य की शक्ति पर बहुत बल दिया गया था।

5. **शिक्षित वर्ग द्वारा वैचारिक समर्थन (Ideological support by scholars):-** हॉब्स और बोडिन जैसे विद्वानों ने शक्तिशाली साम्राज्य की वकालत की क्योंकि उनका मानना था कि केवल शक्तिशाली साम्राज्य ही समाज में शांति और स्थिरता सुनिश्चित कर सकते हैं।

प्रश्नः इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं कि 16वी-17वीं सदी के यूरोप में राष्ट्रीय-राज्य का उद्भव संयोग से अधिक और योजना से कम था?

उत्तरः 16वीं-17वीं सदी के यूरोप में राष्ट्रीय राजतंत्र के उद्भव के लिए एक से अधिक कारक उत्तरदायी रहे थे। इनमें से कुछ कारक महज एक संयोग के परिणाम थे, तो कुछ योजना की उपज। हालांकि इनके उत्थान में दोनों प्रकार के कारकों की भूमिका रही है, परंतु योजना की भूमिका अधिक प्रभावी मानी जानी चाहिए। इसे निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है-

1. **सामंतवाद बनाम राजतंत्र**- सामंतवाद का विघटन निश्चय ही संयोग का परिणाम था, परंतु सामंतवाद के विघटन का परिणाम अराजकता अथवा जनता का शासन भी हो सकता था। लेकिन यूरोप के महत्वाकांक्षी शासकों ने इससे फायदा उठाया और इसे योजनाबद्ध ढंग से राजतंत्र के पक्ष में मोड़ दिया।

2. **पुनर्जागरण बनाम प्रोटेस्टेंट आंदोलन**- पुनर्जागरण प्रायोजित नहीं था, बल्कि संयोगवश था, परंतु प्रोटेस्टेंट आंदोलन तो निश्चय ही प्रायोजित था। इसे मध्यवर्ग एवं यूरोपीय राजतंत्र का समर्थन प्राप्त हुआ था।

3. **व्यावसायिक क्रांति बनाम वाणिज्यवाद**- व्यावसायिक क्रांति एक स्वाभाविक प्रक्रिया की उपज थी, इसलिए इसे संयोग का ही परिणाम माना जाना चाहिए। किंतु वाणिज्यवाद एक सुनियोजित कदम था, जो यूरोपीय राजंतत्र के द्वारा अपनाया गया था और इसका उद्देश्य था- राज्य एवं राजतंत्र को शक्तिशाली (आर्थिक रूप से) बनाना।

अतः हम ऐसा कह सकते हैं कि यूरोप में राष्ट्रीय राजतंत्र के उद्भव में संयोग की अपनी भूमिका रही, परंतु निर्णायक भूमिका तो योजना ने ही निभाई।

प्रश्न :- यूरोप में राष्ट्रीय-राज्य के उद्भव के कारकों की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न-विश्लेषण:- यह प्रश्न अपने स्वरूप में Hypothetical है अर्थात् हमें इस Hypothesis को सिद्ध करना है। इसमें Keywords हैं– 'राष्ट्रीय-राज्य', 'उद्भव' तथा Directory word है 'व्याख्या कीजिए'।

उत्तर:- 16वीं-17वीं सदी के यूरोप में राष्ट्रीय-राज्य का उद्भव एक जटिल प्रक्रिया का परिणाम था। सामंतवाद एवं यूरोपीय चर्च व्यवस्था के विघटन ने इसके उद्भव के मार्ग को प्रशस्त किया एवं वेस्टफेलिया की संधि ने इसे पूरा कर दिया। निम्नलिखित कारकों ने इस प्रक्रिया में योगदान दिया-

- **सामंतवाद का विघटन**- इसका लाभ यूरोप के महत्वाकांक्षी शासकों को मिला। उन्होंने अपनी सत्ता को स्थापित करने का प्रयत्न किया।
- **यूरोपीय चर्च व्यवस्था का विघटन**- इसका फायदा उठाकर राजतंत्र ने क्षेत्रीय चर्च को राज्य के अधीन कर लिया।
- **वाणिज्यवाद**- इसके आधार पर यूरोपीय राजतंत्र ने राज्य के आर्थिक आधार को मजबूत किया तथा वाणिज्यवाद से प्राप्त लाभ के माध्यम से स्थायी सेना एवं स्वतंत्र नौकरशाही स्थापित की जा सकी।
- **वेस्टफेलिया की संधि**- इसके आधार पर राष्ट्रीय-राज्य को पहचान मिली तथा यूरोपीय राज्य व्यवस्था की शुरुआत हुई।

इस प्रकार कई कारकों ने मिलकर राष्ट्रीय राजतंत्र के उद्भव को संभव बनाया।

तीस वर्षीय युद्ध एवं वेस्टफेलिया की संधि
(1618-1648)
Thirty Years War & Treaty of Westphalia (1618 – 1648)

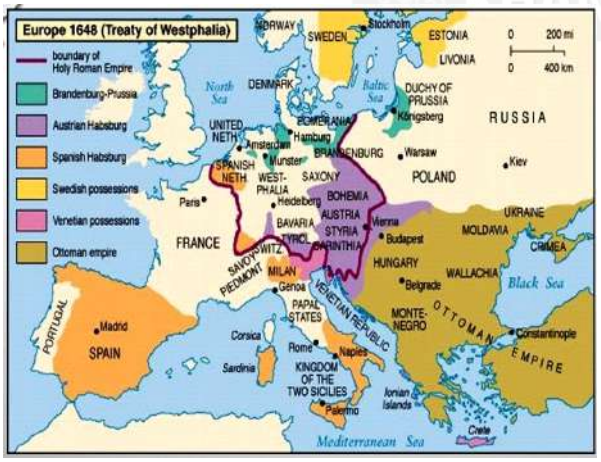

- जैसाकि हम जानते हैं कि धर्म सुधार आंदोलन के बाद यूरोपीय देश आपस में विचारधारा के आधार पर उसी प्रकार बंट गए थे, जिस प्रकार आगे वे शीतयुद्ध के काल में बंटे थे। ये प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक के बीच बंटे हुए थे, इसलिए उनके बीच गठबंधन भी धर्म के आधार पर होता था। परंतु तीस वर्षीय युद्ध का यूरोपीय देशों के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर निम्नलिखित प्रभाव देखा गया-

1. यह यूरोप की राजनीति में यथार्थवाद का सूचक बन गया क्योंकि अब राज्यों के बीच गठबंधन निजी हित से प्रेरित होकर बनने लगा। उदाहरण के लिए, फ्रांस एक रोमन कैथोलिक राष्ट्र होते हुए भी रोमन कैथोलिक शक्ति पवित्र रोमन साम्राज्य के विरुद्ध खड़ा हो गया।
2. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की शुरुआत हुई। यह आधुनिक मॉडल पर स्थापित था। इन संबंधों के संचालन के लिए अंतर्राष्ट्रीय विधि व्यवस्था अस्तित्व में आई। इतना ही नहीं, इस सम्मेलन में राष्ट्रीय-राज्य को मान्यता मिली। इसके बीच संबंधों के निर्धारण में राजा को मान्यता दी गई। प्रजा की भूमिका स्वीकार नहीं की गई। किसी भी राष्ट्र को किसी दूसरे राष्ट्र के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं मिला। वस्तुत: वेस्टफेलिया सम्मेलन में ही निश्चित भौगोलिक सीमा पर आधारित राष्ट्रीय-राज्य के मॉडल को स्वीकृति मिली।
3. जर्मन क्षेत्र में लगभग 200 छोटे-छोटे राज्य थे, परंतु इन्हें अपनी विदेश नीति के संचालन का अधिकार नहीं था। जब तीसवर्षीय युद्ध में पवित्र रोमन साम्राज्य का पतन हो गया, तो फिर जर्मन राज्यों को स्वतंत्र रूप में विदेश नीति के संचालन का अधिकार मिला।
4. अब तक यूरोपीय राष्ट्रों के संबंध दो कारकों से निर्धारित होते रहे थे- धार्मिक गठबंधन (रोमन कैथोलिक अथवा प्रोटेस्टेंट) एवं पवित्र रोमन साम्राज्य का प्रभाव। परंतु जब ये दोनों कारक समाप्त हो गए, तो वेस्टफेलिया की संधि के पश्चात् यूरोपीय देशों के संबंध परस्पर शक्ति संतुलन की अवधारणा के आधार पर निर्धारित होने लगे। दूसरे शब्दों में, यदि कोई एक राष्ट्र अधिक शक्तिशाली बन जाता और यूरोप के लिए खतरा उत्पन्न करता, तो उसके विरुद्ध कई राष्ट्र आपस में गठबंधन बना लेते।

प्रश्न:- वेस्टफेलिया की संधि ने यूरोपीय राजनीति को एक नई दिशा दी। स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न विश्लेषण:- यह प्रश्न अपने स्वरूप में Hypothetical है। इसमें Keywords हैं 'वेस्टफेलिया की संधि', 'यूरोपीय राजनीति', 'नई दिशा' तथा Directory word है 'स्पष्ट कीजिए'।

उत्तर- वेस्टफेलिया की संधि यूरोपीय राजनीति में एक विभाजक रेखा बनकर आयी। इसने राजनीति के आधार, स्वरूप एवं दिशा को बदल दिया। इसे निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है-

- पहले राज्यों के बीच संबंधों का आधार धर्म होता था, अब उसकी जगह कूटनीति ने ले ली।

- उसी प्रकार, पवित्र रोमन साम्राज्य के विघटन के पश्चात् यूरोप की राजनीति में खालीपन आ गया। उसे भरने के क्रम में शक्ति संतुलन की अवधारणा विकसित हुई।
- फिर युद्ध के विकल्प के रूप में कूटनीति की शुरुआत हुई।
- अंतर्राष्ट्रीय विधि व्यवस्था की शुरुआत भी वेस्टफेलिया की संधि के पश्चात् देखी गई।
- सबसे बढ़कर यूरोपीय राज्य प्रणाली की शुरुआत हुई। अब राष्ट्र के प्रधान के रूप में राजा को स्वीकृति प्राप्त हुई तथा विभिन्न राज्यों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित हुए।

इस प्रकार वेस्टफेलिया की संधि के पश्चात् यूरोप में आधुनिक राजनीति की शुरुआत हुई।

अंतर्अनुशासनात्मक दृष्टिकोण (Interdisciplinary Approach)

1. **अर्थव्यवस्था (Economy)** - जिसे हम ग्लोबल अर्थव्यवस्था के नाम से जानते हैं, उसका आरंभिक विकास इसी काल में देखने को मिलता है। इसे 'वाणिज्यवाद' के रूप में देखा जा सकता है। यूरोपीय शासकों ने अमेरिकी महाद्वीप से लेकर पूर्वी एशिया एवं दक्षिणी-पूर्वी एशिया तक अपने उपनिवेश स्थापित किये। इस प्रकार एक ग्लोबल अर्थव्यवस्था कायम हुई।

   जिसे हम वाणिज्यवाद के नाम से जानते हैं, वह एक आर्थिक दर्शन भी है। इसके अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की मात्रा सीमित होती है, इसीलिये इसमें सभी देशों को समान रूप से लाभ नहीं मिल पाता। एक देश का लाभ, दूसरे देश के घाटे पर निर्भर करता है, इसलिये प्रत्येक देश को चाहिये कि वह व्यापार संतुलन अपने पक्ष में बनाए रखने के लिये कृत्रिम उपायों का सहारा ले। परंतु, यह एक खतरनाक आर्थिक दर्शन था। आगे इसे एक प्रमुख अर्थशास्त्री एडम स्मिथ से चुनौती मिली।

2. **यूरोपीय संस्कृति में परिवर्तन के परिणामस्वरूप यूरोप में आधुनिकता को प्रोत्साहन (Modernization of Europe)-**

- मानववाद, व्यक्तिवाद और धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा ने यूरोपीय समाज को अन्य समाजों से पृथक् कर दिया।
- धर्म का प्रभाव कम होने एवं धर्मनिरपेक्षता के विकास के कारण यूरोप में स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार यूरोप अन्य महाद्वीपों को पीछे छोड़ता हुआ आगे निकलता गया।
- *(एक समय था कि चीन संसाधन और तकनीक में यूरोप से आगे था, परंतु अब चीन, यूरोप से पिछड़ता चला गया। इसका कारण हो सकता है- यूरोपीय देशों को अमेरिकी महाद्वीप का संसाधन प्राप्त होना। एक दिलचस्प तथ्य यह है कि दिशा सूचक यंत्र का विकास भी सर्वप्रथम चीन ने किया तथा 15वीं सदी में चीन के एक शासक जेंग हे (Zeng He) ने सामुद्रिक यात्रा आरंभ की थी। उसे 'चीन का कोलंबस' कहा गया था। परंतु चीन के परंपरागत कंफ्यूशियसवादी समाज ने उसे आगे बढ़ने नहीं दिया।)*

■■■